ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-4* Issue-11* December- 2019
Innovation The Research Concept

साम्प्रदायिक सद्भाव और डॉ. श्रीकृष्ण सिंह : एक अध्ययन

सारांश

प्रस्तुत आलेख के मर है कि सन् 1920 से ही साम्प्रदायिकता एक कलंक की तरह भारतीय समाज में आने लगी थी। वि''ोष तौर पर दे''ा बंटवारे के बाद साम्प्रदायिकता ने तो जड़ ही पकड़ लिया। बिहार भी इससे अछूता नहीं रहा। जगह–जगह पर हिन्दू और मुसलमान आपस में विभाजित होकर दंगों में उलझ गये। यही हिन्दू मुसलमान स्वतंत्रता की लड़ाई में कंधे–से–कंधे मिलाकर योगदान किया। लेकिन अंग्रेजों की नीतियों के चलते इन दोनों सम्प्रदायों में दरार आ गयी । इस प्रक्रिया को रोकना बहुत आव''यक था। स्वयं गाँधी जी भी हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए जूझ रहे थे।

पुष्पा कुमारी
सहायक प्रोफेसर, इतिहास
एल.एस.कॉलेज, मुजफ्फरपुर
बी.आर.अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, भारत

रितेश कुमार
एम.ए., पी–एच.डी., इतिहास
बी.आर.अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, भारत

प्रस्तावना

बिहार में साम्प्रदायिक तत्वों को दबाने में एवं हिन्दू–मुस्लिम के बीच एकता लाने में बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह का क्या योगदान रहा है। इस अध्याय में उनके योगदानों का वर्णन दो खण्डों में विभाजित है। मुख्यमंत्री होने से पहले और मुख्यमंत्री होने के बाद।

मुख्यमंत्री होने से पूर्व

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह और साम्प्रदायिक सौहार्दता दोनों एक दूसरे के पूरक थे। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की राजनीति बुनियाद मुंगेर जिले में साम्प्रदायिक सौहार्द के आधार पर ही रखी गयी थी। सभी वर्ग और समुदाय के लोगों का पुरा विश्वास उनकी राजनीति और समाजनीति पर था। उनके जीवन का सम्पूर्ण क्रियाकलाप इस कथन को प्रमाणित करता है।

1920 का समय भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल माना जाता है। लाल, बाल और पाल की त्रिमूर्ति भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत थे। क्रांतिकारियों ने भी अपने स्तर से अंग्रेजी हुकूमत की जड़ों पर प्रहार करने की कोशिश की परन्तु 1920 के पूर्व चलाये जा रहे राष्ट्रीय आन्दोलन में सभी वर्गों की हिस्सेदारी नहीं थी। मुसलमान समुदाय के लोग अलग मानसिकता में जी रहे थे। परन्तु महात्मा गाँधी के राष्ट्रीय राजनीति में पर्दापण के साथ इस दिशा में परिवर्तन का संकेत मिलने लगा। वे इसे सचमुच में राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप प्रदान करना चाहते थे। जिसमें सभी धर्म, जाति और समुदाय की हिस्सेदारी हो। महात्मा गाँधी को इसके लिए सुअवसर भी प्राप्त हुआ। तुर्की के खलिफा के प्रश्न पर जब सम्पूर्ण भारतवर्ष के मुसलमान आंदोलित हो उठे और खिलाफत आन्दोलन में सिरकत करने लगे तो महात्मा गाँधी के लिए मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्यधारा में लाने का एक सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने कांग्रेसजनों को विश्वास में लेकर खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया और अंग्रेजों के खिलाफ चलाये जाने वाले असहयोग आन्दोलन को खिलाफत आन्दोलन से जोड़कर दोनों को परस्पर का सहयोगी बना दिया। धर्म की दीवारें टूटने लगी और असहयोग आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप प्राप्त हुआ।

महात्मा गाँधी के इन विचारों का डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के जीवन पर गहरा असर पड़ा। वकालत के पेशे में रहते हुए वे राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए ही चिंतनशील रहते थे। महात्मा गाँधी ने जब साम्प्रदायिक सौहार्द पर आधारित राष्ट्रीय आन्दोलन की नींव रखी तो डॉ. श्रीकृष्ण सिंह क्रांतिकारी संगठन की सक्रियता त्यागकर असहयोग आन्दोलन की तैयारी में लग गये। असहयोग आन्दोलन की तैयारी के सिलसिले में महात्मा गाँधी और शौकत अली का मुंगेर आगमन हुआ था। उनके आगमन से मुंगेर जिले में अभूतपूर्व चेतना जागृत हुई। इन दोनों के संयुक्त अपील का कांग्रेसजन सहित मुंगेर के निवासियों पर गहरा असर पड़ा। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, तेजेश्वर प्रसाद, नेमधारी सिंह आदि नेता विशेष रूप से सक्रिय हुए। इन नेताओं को असहयोग आन्दोलन को सर्वांग स्वरूप देने में इसलिए सफलता प्राप्त हुई, चूँकि शाह मुहम्मद जुबैर, मौलवी जफीर उद्दीन, मोहम्मद अली अजीम साहब जैसे वरिष्ठ मुस्लिम नेताओं के साथ पूर्ण तालमेल

एवं समन्वय स्थापित करने में सफल रहे। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि डॉ. श्रीकृष्ण सिंह और शाह जुबैर साहब का जो व्यक्तिगत संबंध था वह इतने विश्वास पर आधारित था कि सम्पूर्ण मुंगेर जिले में सभी समुदायों के लोग इनके संयुक्त नेतृत्व पर पूर्ण विश्वास कर सके।[1]

महात्मा गाँधी और शौकत अली का व्यक्तित्व मुंगेर जिले में इतना प्रभावी सिद्ध हुआ कि जिला कांग्रेस कमिटी के गठन में भी उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का असर दिखने लगा। 1920 में जिला कांग्रेस कमिटि गठित हुई और शाह जुबैर, इसके अध्यक्ष बनाये गये। तेजेश्वर प्रसाद सचिव हुए और डॉ. श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण जिले में गाँव से लेकर प्रखंड स्तर तक संगठन की नींव डालने की जिम्मेवारी सौंप दी गई।[2]

श्रीकृष्ण सिंह 1916 से ही क्रांतिकारी संगठन से जुड़े हुए थे। उपेन्द्र ट्रेनिंग अकादमी के एक बंगाली शिक्षक का संबंध बंगाल के क्रांतिकारी संगठन से था। जिनके प्रभाव में आकर डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने कृपाण से ऊँगली चीर कर, मस्तक पर गंगा मैया की गोद में खून का टिका लगाते हुए यह कसम खाई थी कि जब तक देश आजाद नहीं होगा वे चैन की नींद नहीं लेंगे, और सचमुच में उन्होंने चैन की नींद नहीं लिया। उक्त क्रांतिकारी संगठन में उनके प्रमुख सहयोगी हवेली खड़गपुर के बनारसी प्रसाद सिंह भी थे। आगे चलकर जब खड़गपुर के विभिन्न गाँवों में सिंघेश्वर चौधरी के नेतृत्व में नीलहें साहबों के विरूद्ध नील किसानों का आन्दोलन हुआ तो डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने नील किसानों के मुकदमें की पैरवी मुंगेर की अदालत में अपना कर्तव्य मानकर करने लगे। उनके इस क्रियाकलाप से उस इलाके के अत्यंत पिछड़े एवं मुस्लिम समुदाय में भी उनके प्रति विश्वास का भाव जग चुका था। इसलिए जब संगठन का दायित्व उनके ऊपर आया तो शाह जुबैर को अपना नेता मानते हुए वे पूरे जिले में सभी को अपने विश्वास में लेने में सफल रहे। जिले के सभी प्रखंड में कांग्रेस कमिटी का गठन हुआ। शाह जुबैर को अपने नेतृत्व से अधिक डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की क्षमता का भरोसा था। दूसरी तरफ डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की लोकप्रियता अधिक होने पर भी उन्होंने शाह जुबैर को बड़ा भाई मानने में कभी कंजूसी नहीं की।[3]

मुंगेर जिले में असहयोग आन्दोलन की तैयारी पूरी हो चुकी थी। खिलाफत के नेताओं के साथ कांग्रेस का पूर्ण तालमेल कायम हो चुका था। ऐसी परिस्थिति में भी राष्ट्रीय नेताओं के बीच असहयोग आन्दोलन की सफलता को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई थी। इस असमंजस की स्थिति को तोड़ने का काम डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के प्रमुख सहयोगी बनारसी प्रसाद सिंह ने किया। 1920 के गोपाष्टमी के अवसर पर हवेली खड़गपुर में एक किसान सभा का आयोजन हुआ था, जिस आयोजन में डॉ. श्रीकृष्ण सिंह प्रमुख वक्ता थे। लोगों की उपस्थिति इतनी अधिक हुई कि मुंगेर जिले में उक्त तिथि को ही असहयोग आन्दोलन का प्रारंभ हवेली खड़गपुर की धरती से किया गया।[4]

असहयोग आन्दोलन के प्रारंभ होने के साथ ही मुंगेर जिले में हिन्दू–मुस्लिम एकता का अपूर्व रूप दिखाई पड़ने लगा। इस आंदोलन के दौर में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का आगमन मुंगेर हुआ। मुंगेर की सक्रियता को देखते हुए बिहार के आन्दोलन को संचालित करने के लिए जो प्रमुख तीन केन्द्र बनाये गये थे, उसमें मुंगेर को भी एक केन्द्र बनाया गया। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह मुंगेर जिले में अपने सफल प्रयोग के कारण एवं प्रभावी व्यक्तित्व के कारण अब प्रांतीय स्तर पर नेतृत्व वर्ग में आ गये। असहयोग आन्दोलन में सांप्रदायिक सौहार्द पैदा करने का जो उन्होंने अनूठा उदाहरण पेश किया था, उसी वजह से ऐसा संभव हुआ।

सन् 1921–24 के दौरान मुंगेर में साम्प्रदायिक दंगे फूट पड़े, तो डॉ. श्रीकृष्ण सिंह को बहुत तकलीफ पहुँचा। उन्होंने किसी का पक्ष नहीं लिया, जबकि बिहार के बहुत सारे नेताओं पर पक्षपात का आरोप लगा। हसन इमाम के अनुरोध पर आचार्य जे.बी. कृपलानी को मुंगेर भेजा गया। श्रीकृष्ण सिंह इन सबसे अलग रहे उनका तर्क था कि ''मैं हिन्दू–मुसलमानों को लड़ाने के लिए नहीं हूँ। इनको मिलाकर अंग्रेजों से मुल्क को आजाद कराने का सवाल प्रमुख है, इसकी मूर्खता से मेरा कोई वास्ता नहीं।'' श्रीकृष्ण सिंह की ऐसी बातों से कई बार उसके नजदीकी लोग भी उनसे खफा हो जाया करते थे। लेकिन वे हमेशा वतन फरमानी के काम में जुटे रहे। कभी भी उन्होंने फूट–परस्ती को प्रश्रय नहीं दिया।[5]

जहाँ बड़ी–बड़ी सख्शियतों में कुछ लोग मुस्लिम लीग के बहाव में बह गये या हिन्दू प्रतिक्रियावाद के भंवर में डूब गये, वहीं श्रीकृष्ण सिंह के पाँव कभी नहीं लड़खड़ाये।[6]

1924 के चुनाव में डॉ. श्रीकृष्ण सिंह जिला बोर्ड के सदस्य चुने गये। इस समय तक वे मुंगेर जिले के एकछत्र नेता हो चुके थे और सभी का आग्रह था कि वे जिला बोर्ड के चेयरमैन हो जाएँ। परन्तु उन्होंने इस प्रलोभन को यह कहकर ठुकरा दिया कि ''शाह मोहम्मद जुबैर मेरे बड़े भाई के समान हैं तथा वे जब तक मौजूद हैं, तब–तक चेयरमैनी की गद्दी उन्हीं के लिए महफूज रहनी चाहिए।'' अपनी इस प्रतिज्ञा को उन्होंने जुबैर साहब के साथ जीवनपर्यन्त निभाया और उनके अदंर स्वयं वाइस चेयरमैंन रहकर वह प्रसन्नता के साथ बोर्ड की सेवा करते रहे। प्रान्त और देश की राजनीति पर विशेषतः हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रश्न पर इस छोटी–सी घटना का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। मुंगेर जिला बोर्ड का प्रबंध प्रांत भर में आदर्श रहा। श्रीकृष्ण सिंह ने आरंभ से ही सद्भावना, पारस्परिक प्रेम, त्याग, उदारता की जो परम्परा वहाँ कायम कर दी वह आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। चेयरमैनी का सवाल मुंगेर जिले की राजनीति को प्रदूषित नहीं कर सका। यही वजह थी कि उनके खिलाफ सारे राजनीति–तिकड़म विफल रहे।[7]

''मुंगेर में शाह जुबैर और श्रीकृष्ण सिंह की जोड़ी ऐसी थी जिसकी तुलना किसी दुसरे जिले से नहीं की जा सकती थी। दोनों के दोनों प्रभावशाली और परस्पर मित्र थे। वहाँ जितने काम हुए या होते थे, दोनों

की राजामंदी से। श्री बाबू अपनी वाग्मिता के जोड़ से बिहार केसरी का पद प्राप्त कर चुके थे। जिले के कोने–कोने में उनके सिंहनाद की गुंज पहुँच चुकी थी और जहाँ कभी भी किसी तरह का मतभेद होता, उनके पहुँचने के साथ ही दूर हो जाता था। हिन्दू और मुसलमान दोनों संप्रदाय के मेम्बरों का चुनाव वहाँ संतोषजनक रूप से हुआ और सभी उम्मीदवार वहाँ विजयी होकर रहे। शाह साहब को चेयरमैन बनाकर श्रीबाबू ने अपनी महत्ता का परिचय दिया और इससे मुसलमानों के दिल पर एक जबर्दस्त असर हुआ। प्रांत के सारे कांग्रेस बोर्डो में मुंगेर का नम्बर ऊँचा रहा। आपस की तू–तू, मैं–मैं से बचकर बोर्ड का प्रबंध इस तरह होता रहा कि सर गणेशदत्त के बहुत कोशिश करने पर भी कोई नुक्स नहीं मिल सका। वे अपना एक भी अनुयायी नहीं बना सके। बहुत कोशिश करके भी कांग्रेस के विपक्ष में उनकी दाल नहीं गली।''[8]

डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह के उपयुक्त विचार डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के महत्व को दर्शाते हैं। चूंकि तत्कालीन राजनीति में कांग्रेस के प्रान्तीय नेतृत्व की लड़ाई दोनों नेताओं को एक–दूसरे का प्रतिद्वन्द्वी माना जाता था, परन्तु श्रीकृष्ण सिंह की योग्यता की डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह द्वारा मान्यता उनके व्यक्ति की ऊँचाई को ज्यादा स्पष्ट करती जान पड़ती है।

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की सक्रियता के दौर में मुंगेर जिला कांग्रेस कमिटी ने जो पाँच–सूत्री कार्यक्रम तय किया था वह गाँधीवादी राजनीति का आईना सिद्ध हुआ । ये पाँच सूत्र थे ग्राम पंचायत की स्थापना, स्वदेशी का प्रचार, राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना, हिन्दू–मुस्लिम एकता को बढ़ावा और अछूतोद्वार। उपर्युक्त कार्यक्रम के प्रचार अभियान एवं क्रियान्वयन के सिलसिले में शाह जुबैर साहब, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, तेजेश्वर प्रसाद, नेमधारी सिंह, धर्म नारायण सिंह आदि नेताओं को सरकार के नियमों का भी उल्लंघन करना पड़ा और उन्हें जेल जाना पड़ा। 1922 में लक्खीसराय में मुंगेर जिले की राजनैतिक सम्मेलन हुआ था उसमें भी राष्ट्रीय नेताओं की सिरकत हुई थी।[9]

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह साम्प्रदायिकता के खिलाफ मुखर होते चले गये। दिसम्बर, 1924 में पूर्णिया में आयोजित बिहार प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि अगर सभी दल एकजूट होकर स्वराज्य के लिए सामान्य कार्रवाई में उतर जाये तो सरकार की दमनकारी नीति का सही जबाव दिया जा सकता है। इसके लिए सबसे जरूरी काम है, गाँव के लोगों में देशभक्ति की भावना भरना और साम्प्रदायिकता के जहर को उखाड़ फेंकना।[10]

बिहार में अप्रील–मई 1926 में सासाराम, मुंगेर, संथालपरगना, मुजफ्फरपुर, दरभंगा आदि शहरों में साम्प्रदायिक दंगे हुए । श्रीकृष्ण सिंह ने दंगों को रोकने तथा जनता के बीच व्याप्त तनाव को खत्म करने के लिए दंगा पीड़ित क्षेत्रों का दौरा किया। मुंगेर में हिन्दू तथा मुसलमान समुदायों के मध्य सौहार्द लाने के लिए शाह जुबैर के साथ घर–घर जाकर लोगों को समझाया, हिन्दू–मुस्लिम दोनों को जुनून छोड़कर राष्ट्र की ओर देखने की सलाह दी। इसका असर यह हुआ कि मुंगेर में न केवल दंगे बंद ही नहीं हो गये बल्कि इसके प्रचार का मौका ही नहीं मिला।[11]

मई, 1935 में भी श्रीकृष्ण सिंह ने दंगा पर काबू पाया। मुंगेर शहर में एक मंदिर को तोड़ने के सवाल पर हिन्दू और मुसलमानों के बीच तनाव इस कदर बढ़ा कि दंगा होने की नौबत आ पहुँची। दंगा होने ही वाला था कि श्रीकृष्ण सिंह मुंगेर पहुँच गये, दोनों समुदायों के लोग एक दूसरे को गला काटने को तैयार खड़े थे। श्रीकृष्ण सिंह को देखते हुए ही दंगाईयों के जोश ठंडाने लगे। जाँच से पता चला कि एक मारवाड़ी परिवार ने कुछ जमीन एक मुसलमान मालिक से दूकान बनाने के लिए लिया था। उसी में उसने एक मंदिर बनवा दिया था। जमीन लीज से वापस होने पर जमीन के मालिक ने जमीन की सफाई कराई तो हिन्दू महासभा वालों ने प्रचारित करा दिया कि मुसलमानों ने एक हिन्दू मंदिर को तोड़ दिया। उसी कारण जनता में दंगा की स्थिति पैदा हो गई। श्रीकृष्ण सिंह ने जब इस सच्चाई को दोनों समुदायों के सामने रख दिया तो सभी संतुष्ट हो गये।[12]

मुख्यमंत्री होने के बाद

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह 1937 में पहली बार बिहार के मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए। प्रो. अब्दुल बारी की अध्यक्षता में मशरक में बिहार प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन हो रहा था। सम्मेलन में ही डॉ. श्रीकृष्ण सिंह को मंत्रिमंडल बनाने के लिए राज्यपाल का निमंत्रण मिला। 20 जुलाई, 1937 को प्रथम कांग्रेस मंत्रिमंडल ने पद ग्रहण किया। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह प्रधानमंत्री (मुख्यमंत्री) तथा अनुग्रह नारायण सिंह, डॉ. शैयद महमूद और जगलाल चौधरी मंत्री नियुक्त हुए।[13]

2 अप्रैल, 1946 को बिहार में दूसरी बार श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस मंत्रिमंडल ने शपथ ग्रहण किया। मंत्रिमंडल में अनुग्रह नारायण सिंह, डॉ. शैयद महमूद को शामिल किया गया।[14]

साम्प्रदायिक एकता के प्रति वे संघर्षरत थे। सत्ता संभालने के पश्चात् हिन्दू–मुस्लिम एकता के और भी पक्षधर हो गये। जब भी सूबे में साम्प्रदायिक गड़बड़ी हुई तब वे अक्सर ही रो पड़ते थे और कहते थे कि ''गाँधीजी को कौन मुँह दिखाऊँगा कि मेरी वजारत में ही मुसलमानों पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा, और मुस्लिम लीग के स्वार्थी नेता चाहे जो भी कहें, किन्तु साधारण मुसलमान–जनता श्रीकृष्ण सिंह की सच्चाई पर यकीन करती है। उसे पूरा भरोसा है कि श्रीकृष्ण सिंह के वजारत में मुसलमानों का बाल भी बांका नहीं होगा।''[15]

मार्च 1946 में सत्ता हस्तान्तरण के सवाल पर भारतीय नेताओं के साथ बातचीत करने के लिए ब्रिटिश सरकार कैबिनेट मिशन को भारत भेजा। इसने वायसराय, प्रांतीय गर्वनरों तथा भारतीय नेताओं से बातें की। इसके बाद 5 मई को कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के साथ कैबिनेट मिशन का त्रिपक्षीय सम्मेलन शिमला में सम्पन्न हुआ। मगर मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग

के सवाल पर यह सम्मेलन असफल हो गया। इसके बाद वायसराय तथा कैबिनेट मिशन की ओर से एक अंतरिम सरकार गठित करने की घोषणा हुई। अन्ततः सितम्बर 1946 में पंडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ने अंतरिम सरकार का गठन किया। कुछ खींचातानी के बाद इसमें मुस्लिम लीग भी शामिल हो गई।

इसी दौरान बिहार में साम्प्रदायिक उन्माद की संभावना बढ़ गई। मुस्लिम लीग ने बिहार सरकार की परेशानियों को बढ़ाने तथा बदनाम करने के लिए गड़बड़ी फैलानी शुरू कर दी। इसके कारण साम्प्रदायिक तनाव बढ़ने लगे। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। बिना अपने कर्तव्य से विचलित हुए उन्होंने जनता से इस ऐतिहासिक मोड़ पर धैर्य से काम लेने तथा शांति रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि साम्प्रदायिक गड़बड़ी कुछ लोग अपने निजी स्वार्थ की सिद्धि के लिए फैला रहे हैं।

भारत का घटनाक्रम तेजी से बदल रहा था। जुलाई में संविधान सभा के लिए चुनाव हुआ। बिहार में कांग्रेस को भारी बहुमत मिला। राजेन्द्र प्रसाद, प्रधानमंत्री श्रीकृष्ण सिंह, सच्चिदानन्द सिन्हा और अनुग्रह नारायण सिंह संविधान सभा के सदस्य चुने गये। मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन से अपनी स्वीकृति वापस ले ली। उसने पाकिस्तान हासिल करने के लिए 16 अगस्त को प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस मनाने का ऐलान कर दिया। इस दिन कलकत्ता में भीषण साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। भयंकर मारकाट तथा लूट–पाट का ऐसा ताण्डव मचा की इंसानियत कांप उठी। कलकत्ता के रक्तपात की गंभीर प्रतिक्रिया बिहार में हुई।[16] मुंगेर में वृहत पैमाने पर दंगा हुआ। जिले के पश्चिमी भाग पर इसका जबर्दस्त प्रभाव पड़ा। दक्षिणी पूर्वी भाग में भीषण दुर्घटनाएँ हुई।[17]

खड़गपुर तथा तारापुर क्षेत्र में भयानक साम्प्रदायिक दंगे हुए जिसके फलस्वरूप सैकड़ों लोगों की जाने गई।[18] वस्तुतः बंगाल की घटनाओं का सर्वाधिक प्रभाव मुंगेर जिले के तारापुर थाने पर पड़ा। लखनपुर, गाजीपुर, रामपुर, खड़वा, भुढेरी, गोरहो, जोराही, मदारपुर, बनगाँव, चुटिया बेलारी आदि गाँवों में दोनों जातियों के मध्य भयंकर दंगे प्रारंभ हुए। खड़गपुर थाने पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ा। खड़गपुर, मुढेरी, राजाडीह, हटिया, खजेचक, तिलवरिया, पतघाघर आदि गाँवों में भंयकर दंगा हुआ। मुफस्सिल थाने के अतरा, खिरोदपुर, कजरा और मुहम्मदपुर में लक्खीसराय के आलापुर और सिंगापुर और शेखपुरा थाने में शेखपुरा, प्रभुविघा और बडूई में बरबीघा थाने में रमजानपुर में भी छिटपुट दंगे की वारदातें हुई।[19]

1946 ई. में भारतवर्ष के साम्प्रदायिक आधार पर विभाजन की बात सच्चाई में बदलने लगी तो अगस्त 1946 में सम्पूर्ण मुंगेर जिले में भयानक साम्प्रदायिक दंगा हुआ। दूसरी तरफ डॉ. श्रीकृष्ण सिंह अपने प्रमुख सहयोगी बनारसी प्रसाद सिंह एवं नंद कुमार सिंह के साथ सम्पूर्ण मुंगेर जिले में समस्या से जूझ रहे थे। साम्प्रदायिक दंगा लंबे समय तक खींच रहा था। इसी बीच मुंगेर जिले में यह खबर फैली कि श्रीकृष्ण सिंह के प्रमुख सहयोगी बनारसी प्रसाद सिंह साम्प्रदायिक दंगे के शिकार हो गये; चूँकि उनका कोई अता–पता नहीं चल रहा था। जब श्रीकृष्ण सिंह को इस बात की खबर मिली तो वे इसलिए बेचैन हो उठे क्योंकि इस खबर के ज्यादा फैलने से साम्प्रदायिकता बढ़ सकती है। जब श्रीकृष्ण सिंह उनकी खोज खबर लेने लगे तो अन्ततोगत्वा यह पता चला कि उत्तरी खड़गपुर के गौरा नामक मुसलमान गाँव के बाहर चबूतरे पर वे अकेले चार दिनों से रह रहे थे और चारों तरफ हिन्दू गाँव के लोग बनारसी प्रसाद सिंह की उपस्थिति के कारण गौरा गाँव पर हमला नहीं कर पा रहे थे। जब मुंगेर के जिलाधिकारी को इस बात की सूचना मिली तो जिलाधिकारी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए यह कहा था कि मुंगेर जिले में अगर चार आदमी भी बनारसी बाबू जैसे होते तो मुंगेर में साम्प्रदायिक दंगा नहीं होता। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह अपने इस सहयोगी के ऐतिहासिक भूमिका से अत्यधिक प्रभावित हुए और उनकी क्षमता एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित धर्मनिरपेक्षता भाव के कारण मुंगेर जिला परिषद् के अध्यक्ष पद का दायित्व उन्हें सौंपा।

बिहार की भीषण दंगे की खबर जब दिल्ली पहुँची, तब पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी विद्रोह को शांत करने के अभिप्राय से पटना आ गये। नेहरू जी के साथ केन्द्रीय मंत्री अबुखनस्तर तथा मिलिटरी कमांडर थे। हवाई जहाज के द्वारा उन्होंने तारापुर आदि दंगा क्षेत्रों का निरीक्षण किया। उन्हें जहाँ–तहाँ जलती बस्तियाँ तथा उनके धुएँ ऊपर उठते नजर आए। मगर हवाई जहाज से कोई सहायता नहीं पहुँचाई जा सकती थी। इसलिए खास–खास स्थानों पर वे मोटर से भी आये। उन्होंने हिलसा, गया आदि दंगागस्त क्षेत्रों का भी दौरा किया। उस इलाके की स्थिति बड़ी भयंकर हो रही थी। जहाँ–तहाँ मानव लाशें पड़ी थीं। पता भी नहीं चलता था कि किस कौम के लोगों की लाशें हैं। दौरा के पश्चात् नेहरू जी पटना के सीनेट हॉल की सभा में भाषण करने आए। सीनेट हॉल में सभा की कार्यवाही चल ही रही थी कि हल्ला हुआ कि नरगौना में पाँच सौ हिन्दू मारे गये। इस अफवाह से कॉलेज के छात्रों में गर्मी आ गई। हॉल में ही वे लोग नेहरू जी के साथ छेड़खानी करने में पिल पड़े। शाहाबाद के एक ब्राह्मण, लोगों को झूठ–सच कहकर उभार रहे थे।

जवाहरलाल नेहरू के चले जाने के बाद नोआखाली से लौटकर महात्मा गाँधी पटना आए और यहाँ कुछ दिनों के लिए जमकर बैठ गए।[20] उन्होंने दंगा पीड़ित क्षेत्रों का दौरा किया और लोगों को सांत्वना दी। इस दौरान डॉ. श्रीकृष्ण सिंह दंगों को रोकने तथा प्रांत में शांति व्यवस्था कायम करने में जुटे रहे। हिन्दू–मुस्लिम की साम्प्रदायिकता की दहकती आग के बीच उन्होंने जिस कड़े कमान को धारण किया, कि अपनी कुशलता के बल पर घोर रक्तपात को रोकने में सफलता पाई, वह अभूतपूर्व है। फलतः भारत के किसी दूसरे भाग में साम्प्रदायिक दंगे उस शीघ्रता से नहीं रूक पाये, जितनी तत्परता तथा शीघ्रता से बिहार में दवा दिये

गये थे।[21] डॉ. श्रीकृष्ण सिंह धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीयता में विश्वास करते थे। हिन्दू–मुस्लिम एकता के सच्चे समर्थक के रूप में उन्हें जाना जाता था। वे गाँधी जी के भी विश्वासपात्र थे। महात्मा गाँधी को हमेशा यह विश्वास रहता था कि जहाँ श्रीकृष्ण सिंह रहेंगे वहाँ सामाजिक सद्भाव कायम रहेगा।

संदर्भ सूची

1. डिस्ट्रिक गजेटियर्स, मुंगेर 1960, पी.राय चौधरी, पृष्ठ–58–59 एवं आनन्द शास्त्री से समालाप पर आधारित, पृष्ठ 58–59
2. पी.सी.राय चौधरी, डिस्ट्रिक गजेटियर्स, मुंगेर, 1960, पृष्ठ–59
3. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, पूर्व मंत्री, बिहार से समालाप पर आधारित।
4. बनारसी प्रसाद सिंह, पूज्य श्रीबाबू, श्रीकृष्ण अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ 46–47
5. प्रधानाध्यापक, उ.वि.भवनाथपुर, सीवान, नरता के अभियान, पृष्ठ 83
6. डॉ. मासूम रजा काजमी, मेरी यादों के आइने में, स्मृति कलश, पृष्ठ–177
7. आचार्य कपिल, श्रीबाबू : संक्षिप्त जीवन परिचय, श्रीकृष्ण अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ 68
8. मेरे संस्मरण, डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह, पृष्ठ 90
9. पी.सी.राय चौधरी, डिस्ट्रिक गजेटियर्स, मुंगेर, 1960, पृष्ठ 59
10. आचार्य कपिल, श्रीबाबू का संक्षिप्त परिचय, श्रीकृष्ण अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ 69
11. पशुपति सिंह, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, स्मृति कलश, पृष्ठ 14
12. उपरोक्त, पृष्ठ 27
13. उपरोक्त, पृष्ठ 29
14. उपरोक्त, पृष्ठ 42
15. मौलवी मोहम्मद यूसुफ, 'बिहार केसरी', श्रीकृष्ण अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ 48
16. पशुपति सिंह, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, स्मृति कलश, पृष्ठ 43
17. के.के.दत्त, फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार, पृष्ठ 344
18. अनुग्रह नारायण सिंह, मेरे संस्मरण, पृष्ठ 416
19. श्रीमती वीणा सिंह से समालाप पर आधारित
20. अनुग्रह नारायण सिंह, मेरे संस्मरण, पृष्ठ 417
21. पशुपति सिंह, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, स्मृति कलश, पृष्ठ 43